भारतीय संविधान

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» संविधान–समाज के नियमों का लिखित दस्तावेज

प्रश्न 1 (आसान). संविधान को हम 'लिखित नियमों का दस्तावेज' क्यों कहते हैं?
उत्तर – क्योंकि इसमें समाज/देश चलाने के नियम लिखकर तय रहते हैं।

प्रश्न 2 (आसान). खेल में नियम न हों तो क्या होता है?
उत्तर – खेल बिगड़ जाता है और मनमानी शुरू हो जाती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). संविधान समाज का 'मूल स्वरूप' बताने में कैसे मदद करता है?
उत्तर – संविधान यह बताता है कि देश में समाज को किस तरह चलना/बनाना है और सरकार कैसे काम करेगी।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर रोज़ प्रशासन/सरकार के फैसले बिना तय नियमों के बदलते रहें, तो लोगों को परेशानी क्यों होगी?
उत्तर – क्योंकि बिना तय और लिखित नियमों के निर्णय मनमाने हो सकते हैं, भरोसा घटता है और अन्याय का खतरा बढ़ता है–इसलिए संविधान जैसे नियम जरूरी होते हैं।

» लोकतांत्रिक समाज में संविधान की जरूरत–(उद्देश्य 1) आदर्शों को साकार करने हेतु

प्रश्न 5 (आसान). लोकतांत्रिक समाज में संविधान की जरूरत सिर्फ सरकार चलाने के लिए नहीं–क्यों?
उत्तर – क्योंकि संविधान आदर्शों को साकार करने की दिशा भी देता है।

प्रश्न 6 (आसान). संविधान नागरिकों को किस चीज़ में मदद करता है?
उत्तर – वे अपने देश को अपनी इच्छा और सपनों के अनुसार रचने में।

प्रश्न 7 (मध्यम). बहु-समुदाय वाले देश में संविधान 'साझी समझ' कैसे बनाता है?
उत्तर – वह देश भर में रक्षा किए जाने वाले आदर्शों और मूल सिद्धांतों पर साझा समझ विकसित करने में मदद करता है।

प्रश्न 8 (कठिन). यदि संविधान समाज के 'मूलभूत स्वरूप' को स्पष्ट न करे, तो देश की व्यवस्था पर क्या असर पड़ सकता है?
उत्तर – दिशा अस्पष्ट हो जाएगी; अलग-अलग समूह अपनी-अपनी पसंद के अनुसार चलने लगेंगे, जिससे मनमानी और असंगति बढ़ सकती है और साझा सिद्धांत कमजोर पड़ेंगे।

» संविधान की जरूरत–(उद्देश्य 2) राजनीतिक व्यवस्था तय करना और बदलाव के लिए आधार

प्रश्न 9 (आसान). संविधान का उद्देश्य 2 किस चीज़ को तय करता है?
उत्तर – देश की राजनीतिक व्यवस्था–शासन कैसे चलेगा और नियम क्या होंगे।

प्रश्न 10 (आसान). परिस्थितियाँ बदलने पर संविधान का क्या काम होता है?
उत्तर – बदलाव के लिए आधार देता है ताकि व्यवस्था टिके और बदलाव नियमों से हो।

प्रश्न 11 (मध्यम). नेपाल के उदाहरण से हम उद्देश्य 2 के बारे में क्या समझते हैं?
उत्तर – राजनीतिक व्यवस्था बदल सकती है; संविधान/नियम बदलाव को टिकाऊ और शांतिपूर्ण आधार देने में मदद करते हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). अगर राजनीतिक व्यवस्था तय न हो और बदलाव का रास्ता भी साफ न हो, तो लोकतंत्र में क्या जोखिम बढ़ता है?
उत्तर – शासन में मनमानी/अस्थिरता, बार-बार टकराव, और सत्ता के लिए ताकत का दुरुपयोग बढ़ सकता है।

» संविधान की जरूरत–(उद्देश्य 3) सत्ता के दुरुपयोग से सुरक्षा

प्रश्न 13 (आसान). उद्देश्य 3 में संविधान का मुख्य काम क्या है?
उत्तर – सत्ता के दुरुपयोग से सुरक्षा देना और मनमानी रोकना।

प्रश्न 14 (आसान). 'बहुमत का दबदबा' से किस तरह का खतरा होता है?
उत्तर – अल्पसंख्यकों की सहमति न लेकर नुकसान पहुँचाने का।

प्रश्न 15 (मध्यम). यदि किसी समुदाय का समूह भीतर के छोटे समूह को दबाने लगे, तो संविधान का उद्देश्य 3 इसमें कैसे मदद करता है?
उत्तर – ताकतवर समूह की मनमानी पर रोक लगाकर कम ताकतवर समूह के खिलाफ दुरुपयोग को सीमित करता है।

प्रश्न 16 (मध्यम). लोग अगर दलगत राजनीति से नाराज़ होकर 'तानाशाह शासन' की बात करें, तो संविधान क्यों रोकता है?
उत्तर – क्योंकि लंबे दौर में तानाशाही अधिकारों और स्वतंत्रता को नुकसान पहुँचाती है; संविधान अधिकार सुरक्षित रखने वाले नियमों को पलटना मुश्किल बनाता है।

प्रश्न 17 (कठिन). कक्षा/समाज में 'बहुमत' से फैसले लेना गलत नहीं, फिर भी उद्देश्य 3 के अनुसार क्या समस्या हो सकती है? समझाइए।
उत्तर – समस्या तब होती है जब बहुमत सिर्फ संख्या की ताकत से दूसरे की सहमति/अधिकार को अनदेखा करके मनमानी थोप दे। उद्देश्य 3 यह सुनिश्चित करता है कि फैसलों में अल्पसंख्यकों के अधिकार सुरक्षित रहें और दबदबा न चले।

» संविधान की 'मुख्य विशेषताएँ'–संघवाद, संसदीय शासन, शक्तियों का बँटवारा

प्रश्न 18 (आसान). संघवाद का मतलब क्या है?
उत्तर – देश में कई स्तरों की सरकारें होना–केंद्र, राज्य और स्थानीय स्तर।

प्रश्न 19 (आसान). संसदीय शासन में सरकार लोगों के प्रति कैसे जवाबदेह रहती है?
उत्तर – चुनावों के जरिए–प्रतिनिधि चुनते हैं और सरकार का बदलाव संभव होता है।

प्रश्न 20 (मध्यम). राज्य (state) और सरकार (government) में अंतर लिखो।
उत्तर – राज्य एक राजनीतिक संस्था है जो निश्चित भूभाग के लोगों का प्रतिनिधित्व करती है; सरकार उसका हिस्सा है जो कानून बनाती और लागू करती है।

प्रश्न 21 (कठिन). अगर किसी देश में कानून बनाने, लागू करने और न्याय करने के काम एक ही संस्था कर दे, तो सत्ता के दुरुपयोग का खतरा क्यों बढ़ेगा? संविधान के 'शक्तियों के बँटवारे' से इसे कैसे रोका जाता है?
उत्तर – जब तीनों काम एक ही संस्था करे, तो गलत करने पर नियंत्रण (checks) कमजोर हो जाते हैं। संविधान शक्तियों का बँटवारा करके विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को अलग-अलग काम देता है, ताकि एक अंग दूसरे अंग पर संतुलन/नियंत्रण रख सके।

» मौलिक अधिकार–राज्य की मनमानी से व्यक्तियों की रक्षा

प्रश्न 22 (आसान). मौलिक अधिकारों का "दोहरा उद्देश्य" क्या है?
उत्तर – नागरिक दावेदारी कर सकें और अधिकार कानून बनाने वाली सत्ता/संस्थाओं पर बाध्यकारी हों।

प्रश्न 23 (आसान). कौन-सा मौलिक अधिकार शोषण के खिलाफ सुरक्षा देता है?
उत्तर – शोषण के विरुद्ध अधिकार।

प्रश्न 24 (मध्यम). अगर राज्य किसी खास धर्म को बढ़ावा दे और दूसरे धर्मों को दबाए, तो कौन-सा अधिकार उपयोग में आएगा?
उत्तर – धार्मिक स्वतंत्रता।

प्रश्न 25 (कठिन). मान लो किसी अल्पसंख्यक समुदाय की भाषा/संस्कृति और शिक्षा से जुड़ी व्यवस्था पर मनमानी रोक लगा दी जाती है। दोहरे उद्देश्य के हिसाब से नागरिक कैसे रक्षा मांगेंगे?
उत्तर – पहला: नागरिक अधिकार के लिए दावेदारी करेंगे कि उनका सांस्कृतिक-शैक्षणिक अधिकार प्रभावित हो रहा है। दूसरा: राज्य की कानून/आदेश देने वाली सत्ता अधिकारों से बाध्य है, और नागरिक संवैधानिक उपचार के जरिए न्याय/राहत मांग सकते हैं।

» मौलिक अधिकारों के उल्लंघन की पहचान–स्थिति-आधारित सोच

प्रश्न 26 (आसान). स्थिति: 12 साल का बच्चा दुकान पर काम कर रहा है। उल्लंघन किस अधिकार का?
उत्तर – शोषण के विरुद्ध अधिकार (बच्चों का शोषण/बाल-श्रम)।

प्रश्न 27 (आसान). स्थिति: एक महिला अधिकारी की पदोन्नति सिर्फ लिंग की वजह से रोक दी गई। अधिकार?
उत्तर – समानता का अधिकार।

प्रश्न 28 (मध्यम). स्थिति: किसी समुदाय को अपनी भाषा में स्कूल खोलने की अनुमति नहीं दी जा रही। अधिकार कौन-सा?
उत्तर – सांस्कृतिक और शैक्षणिक अधिकार।

प्रश्न 29 (कठिन). स्थिति: सरकार एक नागरिक की शिकायत/मामले पर अदालत जाने का रास्ता रोकती है, और कहती है 'तुम्हारा मामला नहीं सुनेंगे।' कौन-सा मौलिक अधिकार प्रभावित होगा, और क्यों?
उत्तर – संवैधानिक उपचार का अधिकार–क्योंकि अधिकार उल्लंघन लगे तो नागरिक को अदालत में जाकर उपाय मांगने का हक मिलता है; रास्ता रोकना उसी अधिकार पर चोट है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो किसी गाँव में पंचायत के फैसले रोज़ बदल दिए जाते हैं–कभी किसी बात के लिए आज 5 की संख्या, कल 3 की संख्या। इससे लोगों में भरोसा नहीं बनता। बताओ, देश/समाज में ऐसा भरोसा बनाने के लिए किस तरह के दस्तावेज की जरूरत पड़ती है?

› देखो, लोगों को भरोसा तब मिलता है जब नियम तय और लिखित हों
› अगर नियम हर दिन बदलते रहें तो निर्णयों में गड़बड़ी/अन्याय का डर बढ़ जाता है
› समाज को चलाने के लिए नियमों का एक 'लिखित दस्तावेज' चाहिए
› यही दस्तावेज संविधान कहलाता है

उत्तर – लोगों में भरोसा और तय दिशा बनाने के लिए संविधान जैसे लिखित नियमों के दस्तावेज की जरूरत पड़ती है।

उदाहरण 2. एक काल्पनिक देश में लोग चाहते हैं कि शिक्षा सबको मिले, लेकिन संविधान में सिर्फ नियम हैं–सरकार कैसे बनेगी–पर 'सबको शिक्षा' जैसा आदर्श नहीं दिया गया। बताओ, इस स्थिति में संविधान का उद्देश्य 1 (आदर्शों को साकार करना) कैसे पूरा नहीं होगा?

› पहले पहचानो कि संविधान का उद्देश्य 1 आदर्शों को साकार करने के लिए आधार देना है।
› अब देखो कि इस देश में 'सबको शिक्षा' वाला आदर्श संविधान में सूत्राबद्ध नहीं है।
› इसलिए नागरिकों को स्पष्ट दिशा नहीं मिलेगी कि वे अपने सपनों/आदर्श के आधार पर किन लक्ष्यों के लिए सरकार से मांग करें।
› समाज का मूलभूत स्वरूप और साझा सिद्धांत भी स्पष्ट नहीं रहेंगे, तो शिक्षा की नीति अस्थिर/मनमानी बन सकती है।
› निष्कर्ष: आदर्शों को नियमों और व्यवस्था का हिस्सा न बन पाने के कारण उद्देश्य 1 पूरा नहीं होगा।

उत्तर – क्योंकि संविधान में 'सबको शिक्षा' जैसे आदर्श को आधार/दिशा के रूप में नहीं रखा गया, इसलिए नागरिकों के सपनों को ठोस लक्ष्य और साझा सिद्धांत की तरह साकार करने की स्पष्ट नींव नहीं बनेगी; शिक्षा की व्यवस्था मनमानी/अस्थिर हो सकती है।

उदाहरण 3. मान लीजिए किसी देश में पहले राजतंत्र है, लेकिन लोगों को लोकतंत्र चाहिए और राजनीतिक बदलाव की मांग उठती है। यह बदलाव स्थायी और शांतिपूर्ण कैसे बन सकता है–इसके लिए संविधान का उद्देश्य 2 कैसे काम करता है?

› पहले देखें: शासन कैसे चलेगा–किसके हाथ में सत्ता होगी, निर्णय कैसे होंगे (यही संविधान राजनीतिक व्यवस्था तय करता है)

› फिर देखें: जब परिस्थितियाँ बदलें तो देश कैसे टूटे बिना नए तरीके पर टिके (यही बदलाव के लिए आधार)

› अब मान लो पुरानी सत्ता संरचना कमजोर पड़ती है; संविधान के नियम नए ढांचे को लागू करने की प्रक्रिया देते हैं

› अंत में समझें: इससे बदलाव ताकत से नहीं, नियमों से होता है–इसलिए स्थिरता और उम्मीद बनी रहती है

उत्तर – संविधान राजनीतिक व्यवस्था तय करके बताता है कि शासन कैसे चलेगा, और बदलाव के लिए आधार देकर यह सुनिश्चित करता है कि नया लोकतांत्रिक ढांचा नियमों/प्रक्रियाओं के जरिए लागू हो, ताकि देश टूटे बिना स्थिरता और शांति बनी रहे।

उदाहरण 4. कक्षा में एक विवाद होता है: खेल का नियम तय करना है। बहुमत वाले लड़के कहते हैं, "हम सिर्फ वही खेलेंगे जो हम चाहते हैं, क्योंकि हमारी संख्या ज्यादा है।" अल्पसंख्यक छात्र कहते हैं, "हमारी पसंद भी माननी चाहिए और हमें भी भाग लेने का मौका मिलना चाहिए।" संविधान के उद्देश्य 3 के हिसाब से बताओ–ऐसे फैसले को संविधान क्यों रोकता है?

› देखो, बहुमत सिर्फ अपनी इच्छा थोप रहा है–दूसरी तरफ की सहमति/हित नहीं देख रहा।

› इसमें "दबदबा" है: ताकत (संख्या) के आधार पर अधिकार छिनने का जोखिम बनता है।

› उद्देश्य 3 के अनुसार संविधान ताकतवर समूह की मनमानी पर रोक लगाता है।

› इसलिए फैसला ऐसा होना चाहिए जिसमें सबके अधिकार/सम्मान सुरक्षित रहें, सिर्फ बहुमत की जीत नहीं।

उत्तर – क्योंकि बहुमत वाला गुट अपनी संख्या की ताकत से अल्पसंख्यक की इच्छा और भागीदारी को दबा रहा है। उद्देश्य 3 के अनुसार संविधान बहुमत के दबदबे/सत्ता के दुरुपयोग पर प्रतिबंध लगाकर अल्पसंख्यकों के अधिकार और सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

उदाहरण 5. मान लो संविधान के हिसाब से तय करना है: "कौन कानून बनाएगा, कौन लागू करेगा, और विवाद होने पर कौन फैसला करेगा?" और एक और बात: "अगर किसी मुद्दे पर राज्य स्तर पर फैसला जरूरी हो, तो क्या सिर्फ केंद्र ही तय करेगा?"

› पहचानो–कानून बनाने का काम विधायिका का है।

› फिर देखो–कानूनों को लागू करने और शासन चलाने का काम कार्यपालिका का है।

› अब सोचो–अगर किसी कानून/निर्णय को लेकर विवाद हो, तो निर्णय न्यायपालिका करेगी।

› अब संघवाद लागू करो–कुछ मुद्दों पर राज्य/स्थानीय स्तर पर भी फैसले होते हैं, यानी केंद्र ही हमेशा अकेला तय नहीं करता।

उत्तर – कानून: विधायिका। लागू करना/शासन: कार्यपालिका। विवाद पर फैसला: न्यायपालिका। और संघवाद के कारण सभी मुद्दों पर केंद्र अकेला फैसला नहीं करता; राज्य/स्थानीय स्तर को भी अधिकार मिलते हैं।

उदाहरण 6. एक नगर में एक आदेश निकलता है: "केवल एक धर्म के बच्चों को स्कूल में प्रवेश मिलेगा, बाकी को नहीं।" किस मौलिक अधिकार का उल्लंघन होगा, और दोहरे उद्देश्य के हिसाब से नागरिक क्या कर सकते हैं?

› पहले देखें: आदेश धर्म के आधार पर भेदभाव कर रहा है, इसलिए धार्मिक स्वतंत्रता प्रभावित होगी।

› फिर पहचानें: ये सिर्फ समाज की बात नहीं, "राज्य का आदेश" है–इसलिए राज्य की मनमानी रुकेगी क्योंकि अधिकार बाध्यकारी हैं।

› अब दोहरे उद्देश्य का भाग 1 लगाओ: नागरिक दावेदारी कर सकते हैं कि यह अधिकार का उल्लंघन है।

› दोहरे उद्देश्य का भाग 2 लगाओ: कानून/आदेश देने वाली सत्ता अधिकार के अनुसार बाध्य है और अधिकार टूटने पर संवैधानिक उपचार के जरिए न्याय मांगा जा सकता है।

उत्तर – यह आदेश धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन है (धर्म के आधार पर भेदभाव)। दोहरे उद्देश्य के अनुसार नागरिक इसकी दावेदारी कर सकते हैं और संवैधानिक उपचार के जरिए न्याय मांगकर ऐसे आदेश को रोकने/सुधार की मांग कर सकते हैं।

उदाहरण 7. स्थिति: "एक राज्य सरकार सार्वजनिक पार्क में किताबें बेचने वाले लोगों को सिर्फ इसलिए हटवा देती है क्योंकि वे किसी दूसरे धर्म के हैं।" किस मौलिक अधिकार का उल्लंघन हो सकता है–और क्यों?

› सबसे पहले अधिकार की 'जमीन' पकड़ो: यहाँ धर्म के आधार पर हटाया/रोका जा रहा है।

› अब कारण देखो: कारण है 'दूसरा धर्म'।

› किस कार्रवाई हुई? सार्वजनिक जगह पर काम/व्यवसाय (किताब बेचना) करने से रोका गया।

› ध्यान दो: धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए–साथ ही अभिव्यक्ति/आजादी और पेशा/काम की आज़ादी भी प्रभावित होती है।

› मुख्य फोकस चुनो: धर्म के आधार पर रोक–यह समानता के अधिकार के भेदभाव वाले हिस्से से सबसे सीधे जुड़ता है।

उत्तर – यह 'समानता का अधिकार' का उल्लंघन हो सकता है, क्योंकि धर्म के आधार पर भेदभाव करके लोगों को सार्वजनिक जगह पर अपना काम/व्यवसाय करने से रोका जा रहा है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- परिभाषा ऐसे लिखो: संविधान समाज/देश चलाने के लिखित नियम देता है।
- Objective-1 लिखते समय 'आदर्श + दिशा + साझा सिद्धांतों की रक्षा' जरूर लिखो।
- उत्तर लिखते समय: "राजनीतिक व्यवस्था तय करना" और "बदलाव का आधार" दोनों जरूर लिखो।
- बोर्ड में लिखना है: "बहुमत का दबदबा/ताकतवर समूह की मनमानी पर रोक"
- बोर्ड में 3 विशेषताएँ लिखो: संघवाद, संसदीय शासन, शक्तियों का बँटवारा + "क्यों" भी।
- उत्तर लिखते समय दोहरा उद्देश्य जरूर लिखो: नागरिक दावेदारी + राज्य पर बाध्यता।
- परीक्षा में कारण लिखो–जैसे 'महिला होने पर'/'13 साल उम्र'–तभी अधिकार पक्का होगा।

एक नज़र में रिवीज़न

› - संविधान = लिखित नियमों का दस्तावेज

› - उद्देश्य 1: आदर्शों को साकार करने की दिशा

› व्यवस्था तय + बदलाव का आधार = उद्देश्य 2

› - उद्देश्य 3: बहुमत दबदबा नहीं–अधिकार सुरक्षित

› संघवाद=सीढ़ियाँ, संसदीय=चुनाव से जवाबदेही, बँटवारा=3 अंग

› - दोहरा उद्देश्य: मांग नागरिक की, बाध्यकारी सत्ता की

› - कारण: उम्र/लिंग/भाषा/धर्म + कार्रवाई: रोक/छीनना = अधिकार चुनो